P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-IV, May-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन(नगरीय व ग्रामीण)

गुरविन्दर कौर
प्राचार्या,
शिक्षा विभाग,
गुरु गोबिन्द सिंह कालेज आफ एजूकेशन,
मलोठ, पंजाब

सारांश

शिक्षक शिक्षा की महत्त्वपूर्ण धुरी है। शिक्षण कार्य शिक्षक के अभाव में उचित प्रकार से नही हो सकता है । शिक्षक बालकों के विकास में एक माली की भाँति कभी एक कुम्हार की तरह अलग– अलग भूमिकाओं के रूप में अपने कर्त्तव्य को निभाते हुये उन्हें सही मार्ग की ओर प्रेरित करता है । अतः आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण के प्रति अपनी अभिव्यक्ति बनाये रखे व अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करें अन्यथा इसका बुरा प्रभाव बालकों की शिक्षा पर पड़ेगा जो कि भावी समाज के महानायक है । प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के अध्यापक व अध्यापिकाओं की शैक्षिक अभिव्यक्ति का अध्ययन करने के लिये डॉ एस.पी.अहलूवालिया के उपकरण के अतिरिक्त साक्षात्कार विधि का भी प्रयोग किया गया है ।

मुख्य शब्दः शिक्षणरत, अभिव्यक्ति, कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व, प्रेरित

प्रस्तावना

शिक्षा मानव की बुद्धि व व्यक्तित्व अथवा संपूर्ण मानव जाति के उत्थान व विकास का मूल साधन है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की जन्मजात व अर्जित शक्तियों का विकास तथा उनके ज्ञान व व्यवहार में परिवर्तन द्वारा योग्य व सभ्य सुसंस्कृत बनाने का प्रयास किया जाता है।

बालक को सही दिशा व भविष्य संवारने का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा के द्वारा किया जाता है। अतः शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक अपने कार्य का पूर्ण रूप से ईमानदारी पूर्वक निर्वहन तभी कर सकता है जब वह स्वयं अभिप्रेरित व उत्साहित होगा। आज के गलाकाट प्रतियोगी युग में शिक्षा प्रदान करना एक व्यवसाय का रूप ले चुका है। प्रत्येक शिक्षक विद्यालयों को केवल ज्ञान प्रदान करने के लिए नहीं अपितु संपूर्ण विकास में सहायक होते हैं किन्तु इतना महान कार्य करने वाले शिक्षक आजकल अपनी अभिवृत्ति से पूर्णतया संतुष्ट नहीं हैं।

विभिन्न शोधों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षकों की आवश्यकताएं जैसे–योग्यतानुसार वेतन का अभाव, सुरक्षा, प्रोन्नति के अवसर, उचित कार्य दशाएं आदि कुछ ऐसे व्यवहारिक प्रश्न हैं जो शिक्षकों की उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों व व मूल्यों को प्रभावित करते हैं।

वास्तव में आधुनिक युग में शिक्षकों की स्थिति में सुधार तो निश्चित रूप से हुआ है किन्तु इस बढ़ती मंहगाई की दर के अनुपात में शइक्षकों का वेतन अभी भी बहुत कम है। निजी संस्थाओं द्वारा अध्यापकों का शोषण सामान्य बात है तथा प्रतिकूल वातावरण इत्यादि अनेक समस्याएं जो शिक्षकों को संबंधित व्यवसाय के प्रति पलायन की ओर प्रेरित करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा शोधकत्री द्वारा उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के अध्यापक व अध्यापिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन कर उनकी तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने का सफल प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य

1. नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-IV, May-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना

नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

संबंधित साहित्य

पंत (2005) ने अपने शोध ए स्टडी आफ दि इफेक्ट आफ एजूकेशन आफ दि एटीट्यूड्स विलीब्स एंड बिहेवियर आफ मुड़िया स्कूल गोइंग चिल्ड्रेन आफ बस्तर, छत्तीसगढ़ विषय पर अध्ययन किया कि शिक्षित बालक अपनी मूल प्रवृत्ति से अलग होने लगे तथा बाहरी संस्कृति अपनाने लगे हैं। मेहमेट (२००६) ने एनाडोलु यूनिवर्सिटी के वरिष्ठ छात्रों पर शोध किया तथा पाया कि शिक्षक के ज्ञान एवं कक्षागत प्रबंधन में सकारात्मक सह संबंध है। प्रस्तुत शोध कार्य अवलोकन विधि द्वारा किया गया एक स्वतंत्र शोध कार्य है।

शोध विधि

शोधकत्री ने अपने प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक शोध विधि का प्रयोग करके जो परिणाम प्राप्त किए उनकी वैधता के कसौटी के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं।

न्यादर्श

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के अध्यापक व अध्यापिकाओं को प्रतिदर्श के रूप में वर्गबद्ध (प्रतिचयन विधि) द्वारा किया गया है।
2. शोध हेतु ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के कुल ५०० अध्यापक व अध्यापिकाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

शोधकत्री ने अपने शोध कार्य हेतु शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति डा. एस.पी. अहलूवालिया के उपकरण का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त साक्षात्कार विधि का भी प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

न्यादर्श में कुल शिक्षकों के मध्यमान व मानक विचलन तथा क्रांतिक मान ज्ञात किया गया।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण व व्याख्या

प्राप्त परिणामों की सारिणी व व्याख्या इस प्रकार है।

तालिका सं.–1
नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	क्षेत्र	N	M	S.D.	SED.	कान्तिक
01	नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक	125	191.18	19.84	2.66	4.46
02	नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापिकाएं	125	202.07	22.18		

तालिका संख्या–1 से स्पष्ट होता है कि नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण ज्ञात करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 191.18 व 202.07 है। तथा मानक विचलन क्रमशः 19.84 व 21.18 पाया गया। दोनों के मानों में अंतर पाया गया, यह अंतर सार्थक है या नहीं के लिए क्रांतिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 4.46 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारिणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 व 2.56 से अधिक पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।

अतः परिकल्पना 01 नगरीय विद्यालय में शिक्षणरत अध्यापक व अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा, निरस्त की जाती है।नगरीय विद्यालय में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। इसके कई कारण हो सकते हैं।

1. नगरीय क्षेत्र के यूपी बोर्ड के विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापकों के परिक्षण प्राप्तांकों में अध्यापिकाओं की तुलना मे अध्यापकों का मध्यमान तथा मानक विचलन कम है। अतः कहा जा सकता है कि नगरीय क्षेत्र के अध्यापकों की तुलना में अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति अधिक है।
2. नगरीय क्षेत्र की अध्यापिकाओं में अध्यापकों की तुलना में जागरुकता अधिक होती है. वे नवीन पद्धतियों, आयामों को ग्रहण करने की तथा कार्यशालाओं व सेमिनारों आदि में प्रतिभाग लेती हैं। जिससे उनमें शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति अधिक पाई जाती है।
3. अध्यापकों को विद्यालय में शिक्षण के अतिरिक्त नेतागिरी व अन्य क्रियाकलापों में समय नष्ट करते पाया गया जबकि अध्यापिकाओं द्वारा गृहकार्य व परिवार की जिम्मेदारी के कारण विद्यालयी कार्यों में ध्यान देते देखा गया व तदुपरान्त गृह कार्य में लिप्त पाया गया।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-IV, May-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

ग्राफ सं.–01
नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

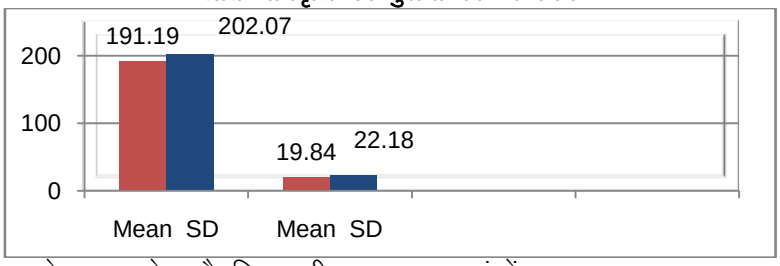

ग्राफ संख्या–01 से स्पष्ट होता है कि नगरीय विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण ज्ञात करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 191.18 व 202.07 है तथा मानक विचलन क्रमशः 19.84 व 21.18 पाया गया।

तालिका सं.–02
ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	क्षेत्र	N	M	S.D.	SED.	क्रान्तिक
01	ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक	125	210.84	18.86	2.56	3.32
02	ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापिकाएं	125	201.24	21.54		

तालिका संख्या–02 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण ज्ञात करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 210.84 व 201.24 है तथा मानक विचलन क्रमशः 18.86 व 21.54 पाया गया। दोनों के मानों में अंतर पाया गया, यह अंतर सार्थक है या नहीं के लिए क्रांतिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 3.32 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारिणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 व 2.56 से अधिक पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।

अतः परिकल्पना 02 ग्रामीण विद्यालय में शिक्षणरत अध्यापक व अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा, निरस्त की जाती है। ग्रामीण विद्यालय में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। इसके कई कारण हो सकते हैं।

1. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापिकाओं में शैक्षिक संचार, आवागमन के साधनों का अभाव, प्रमुख स्थानों से अधिक दूरी इत्यादि कुछ ऐसे कारण हैं जिससे अध्यापिकाओं में शैक्षिक रुचि होने के कारण भी पूर्ण नहीं हो पाती है। जबकि अध्यापकों के समक्ष स्वयं के साधन व स्वतंत्र होने के कारण समस्त शैक्षिक गतिविधियों व क्रियाकलाप पूर्ण हो जाते हैं।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक वातावरण का भी अभाव रहता है तथा पिछड़ेपन के कारण अध्यापिकाएं खुल कर शैक्षिक प्रदर्शन करने में असमर्थ रहती हैं जबकि अध्यापक पुरुष होने के कारण प्रत्येक स्तर पर समाज व प्रथाओं से ऊपर उठकर कार्य कर पाते हैं।

ग्राफ सं.–02
ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

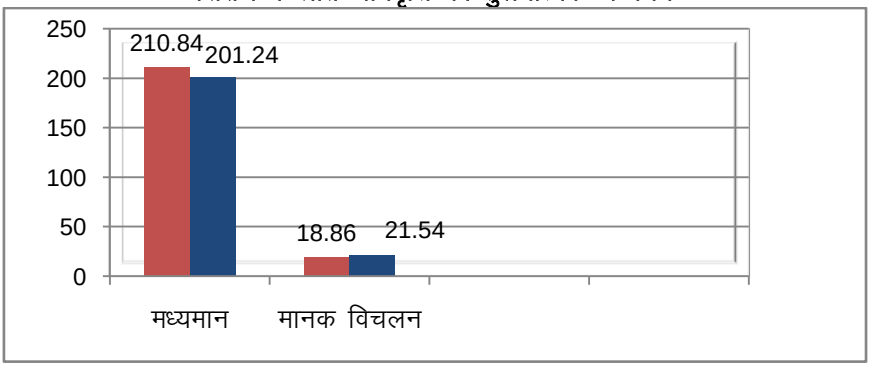

ग्राफ संख्या–02 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यालयों के यूपी बोर्ड के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण ज्ञात करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 210.84 व 201.24 है तथा मानक विचलन क्रमशः 18.86 व 21.54 पाया गया।

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष

1. नगरीय विद्यालयों के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के अध्यापक व अध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में ०.०१ स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।
2. ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षणरत अध्यापक व अध्यापिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में ०.०१ स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।

शैक्षिक उपयोगिता

शिक्षा प्रक्रिया की धुरी शिक्षक ही है। जब तक कोई भी व्यक्ति कार्य के प्रति कर्तव्यनिष्ठ नहीं होगा वह शत प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकता है। उसी प्रकार अध्यापकों की समुचित शिक्षा व निपुणता उत्कृष्ट कार्यों की दृष्टि से आवशयक तत्व है। अतः आवश्यक रूप से विद्यालयों में कुछ ऐसे सुधार आवश्यक व अपेक्षित हैं जिससे शिक्षकों में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का सृजन हो तथा वह अभिवृत्ति स्वमेव ही उत्पन्न हो न कि किसी दबाववश। वास्तव में व शोध प्रपत्र शिक्षकों के लिए पर्याप्त उपयोगी सिद्ध होगा। शोधकत्री द्वारा किए गए शोध कार्य को अध्ययन, अनुभव व प्रयासों के आधार पर क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। वास्तविक रूप में इस शोध कार्य का शैक्षिक उपयोग भावी शिक्षकों व भावी पीढ़ी के भविष्य निर्माण में किया जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डा अनिल कुमार (2007)–''शिक्षा मनोविज्ञान'' पृष्ठ 219
2. मिश्रा विकास (2006)–अध्यापक व अध्यापिकाों की अध्यापन कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 135
3. पंत (2005)''ए स्टडी आफ द इफेक्ट आफ एजूकेशन आन दि बस्तर'', पीएचडी केरल वि.वि. केरल
4. राय पारसनाथ–अनुसंधान परिचय– पृष्ठ 203
5. मिश्रा आत्मानंद–शिक्षण पद्धतियां, नई दिल्ली।
6. सिंह डा. अनिल कुमार (2010) शोध पत्र भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, अंक–1, 2010, लखनऊ
7. शर्मा आर.ए.–निर्देशन तथा परामर्श–पृष्ठ 192, 193
8. शर्मा आर.ए.–अध्यापक शिक्षा, पृष्ठ–201
9. सिन्हा एस. (1960) ''ए सर्वे आफ सम फैक्टर्स आफ दि क्वैश्चन आफ इंडस्ट्रिलाइजेशन इन इंडिया– इंडियन जर्नल आफ फिजियोलाजी–पृष्ठ 201
10. पाठक पी.डी. –शिक्षा मनोविज्ञान पृष्ठ–356–357